आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 12 अगस्त, 2020 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

बरसात में अमूल्य पशुधन का करें बचाव

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाईयो–बहनो !

राम राम सा।

राज्य में मानसून की बरसात के साथ ही नदी–नालों में उफान और जोहड़–तालाब पानी से लबालब हो जाते हैं। इस मौसम में हमें और हमारे पशुओं को गर्मी से तो राहत मिलती है साथ ही मौसमी बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है। भारी वर्षा के बाद वर्षा का पानी जोहड़ों व गड्ढ़ों में एकत्रित होने के कारण सड़ जाता है। नमी व सड़ा हुआ पानी पशुओं की बहुत सी बीमारियों के फैलने का कारण बन जाती है। बरसात हमारे पशुओं की परेशानी का सबब न बनें इसके पुख्ता उपाय किये जाने जरूरी है। अपने पशुओं को गंदा पानी न पीने दें अन्यथा उनके पेट में कई तरह के कीड़े पैदा होकर विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण बनते हैं। पशुओं के आवास को मक्खी–मच्छरों से बचाने के उपाय करें। पशुओं के ऊपर तथा बाड़े में फर्श पर फिनाइल के घोल का छिड़काव करके रोगाणु मुक्त बनाया जा सकता है। पशु के उचित पोषण एवं प्रबंधन पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है। मनुष्य के समान ही पशुओं को भी संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। संतुलित आहार का अर्थ है कि इसमें सभी प्रकार के पोषक तत्व प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेटस, वसा, खनिज–लवण व विटामिन की उपस्थिति पशु की आवश्यकता के अनुसार हो। बरसात माह में पशु पोषण की आवश्यकता अधिक होती है, क्योंकि ज्यादातर पशुओं में यह पशु के गर्भकाल के अंतिम माह में होते हैं। इस दौरान पशुओं का दूध उत्पादन भी बढ़ जाता है, इस प्रकार आहार में प्रोटीन की उचित मात्रा होनी चाहिए। जहां तक संभव हो सके तो पशु को चारा सुखाकर देना चाहिए। ज्यादा दिन रखे हुए चारे में फफूंद होने की संभावना होती है, इसलिए पशु को देने से पहले धूप लगा देनी चाहिए। ग्याभिन पशु को आहार में अतिरिक्त खनिज लवणों का मिश्रण देना चाहिए, ऐसा करने से पशु का उत्पादन बढ़ेगा। पशुओं से पूरी मात्रा में दूध लेने के लिए जरूरी है कि इनकी खुराक में हरे चारे का प्रयोग करें इससे पाचन भी अच्छा होता है जिससे दूध की मात्रा अधिक होती है और समय पर नए दूध में आ जाती है। बीमार पशु को दूसरे पशुओं से अलग रखें और उपचार करवाएं। हमेशा ध्यान रखें कि स्वस्थ पशु से ही अधिक उत्पादन लिया जा सकता है।

(प्रो. {डॉ.} विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार के साथ करार

वेटरनरी विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार ने 4 जुलाई को अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में आपसी सहयोग और समन्वय के लिए एक करार (एम.ओ.यू.) किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र एवं राजुवास देश के नामित संस्थानों में से है जो कि निरन्तर पशु पालकों के हितो हेतु अनुसंधान एंव प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं। इस एम.ओ.यू. के माध्यम से दोनो संस्थाए आपस में उपलब्ध संस्थानों एवं वैज्ञानिक कौशल का समुचित उपयोग कर सकेंगी, जिससे उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परिणाम मिलेगे। कुलपति ने कहा कि दोनो संस्थाए, भविष्य में संयुक्त शोध परियोजनाएं शुरू कर सकेगी, इससे प्रयोगशालाओं के सुद्धढ़ीकरण में मदद मिलेगी एवं पशुपालकों के हितों हेतु नवीनतम तकनीक खोज में सहायता मिलेगी। अश्व अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. यशपाल शर्मा ने कहा कि यह आपसी करार दोनो संस्थानों के लिए बहुत लाभकारी रहेगा।

स्टार्टअप उद्यमिता विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार
पशुपालन के क्षेत्र में नवाचार एवं उद्यमिता की विपुल संभावनाएं

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन नवाचार, ज्ञान और उद्यमिता कौशल केन्द्र, नवानियां, उदयपुर द्वारा स्टार्टअप उद्यमिता विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 17 जुलाई को किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा ने की। उन्होनें पशुचिकित्सा विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उद्यमिता के महत्व के बारे में बताया। कुलपति ने बताया कि तीनो संघटक महाविद्यालयों में इस प्रकार के उद्यमिता केन्द्र प्रारंभ करने वाला देश का अग्रणी वेटरनरी विश्वविद्यालय हैं। कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा नवाचार परियोजना के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. आर.बी. शर्मा ने भी सम्बोधित किया। वेबिनार के मुख्य वक्ता राजकुमार जोशी, वाईस प्रेसीडेन्ट, अबेलॉन क्लीन एनर्जी लिमिटेड एवं निदेशक रेड ब्रिक्स फाउण्डेशन, अहमदाबाद ने स्टार्टअप उद्यमिता एवं इनक्यूबेटर इकोसिस्टम विषय पर अपना ऑनलाइन प्रस्तुतिकरण दिया। आयोजक सचिव डॉ. एस.के. शर्मा ने बताया कि इस वेबिनार में 664 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन पंजीकरण कराया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय की नई पहल : फील्ड पशुचिकित्सकों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर ने फील्ड में कार्यरत पशुचिकित्सकों के ज्ञान एवं कौशल विकास हेतु विभिन्न ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किये है। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि सतत् पशुचिकित्सा शिक्षा के तहत विश्वविद्यालय में नये सृजित मानव संसाधन विकास निदेशालय के अर्न्तगत फील्ड पशुचिकित्सकों के लिए ये ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू किये गये हैं। पशुचिकित्सकों को पशुचिकित्सा के क्षेत्र में उपयोग होने वाली आधुनिक तकनीकों व पशुचिकित्सा की विभिन्न विधियों से अवगत कराने की जरूरत को महसूस करते हुए ये ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू किये गये हैं। निदेशक, मानव संसाधन विकास डॉ. ए.के. कटारिया ने बताया कि इन चार ऑनलाइन पाठ्यक्रम के अर्न्तगत पशु शल्यचिकित्सा में विभिन्न डाइग्नॉस्टिक्स तकनीकों का अध्ययन, छोटे व बड़े पशुओं में फ्रेक्चर प्रबन्धन की विभिन्न तकनीक, वेटरोलिगल केस में हड्डियो के आधार पर पशु प्रजाति की पहचान तथा गायों एवं भैंसों में होने वाले बांझपन एवं इसके निवारण विषय पर होगें।

वर्ल्ड जूनोसिस डे पर पोस्टर का विमोचन

विश्व जूनोसिस (पशुजन्य रोग) दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा द्वारा 6 जुलाई को पशु जन स्वास्थ्य विभाग द्वारा तैयार ''पशु जन्य रोगों से बचाव हेतु जागरूकता'' पर एक पोस्टर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि पूरे विश्व में हर वर्ष 6 जुलाई को जूनोसिस दिवस मनाया जाता है और जनमानस में इन रोगों के प्रति जागरूकता फैलाना इसका प्रमुख उद्देश्य है। विश्वभर में 200 से अधिक ऐसी बीमारियां है जो जूनोटिक है जिनसे बचाव हेतु विशेष सावधानियां एवं सतर्कता बरतना आवश्यक है अतः हमें पशुपालकों को जूनोटिक बीमारियों के प्रति जागरूक करके पशुओ में नियमित टीकाकरण करवाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। पशु जन स्वास्थ्य विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर की प्रभारी डॉ. रजनी जोशी ने बताया कि भारत में होने वाले जूनोटिक रोगों में रेबीज, ब्रुसेलोसिस, बर्डफ्लू, इबोला, निपाह, ग्लैन्डर्स, लेप्टोस्पाइरोसिस, एंथ्रेक्स इत्यादि है।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोन्सीबिलिटी
ग्राम जयमलसर में तालाब का पुर्नउद्धार व पौधों का वितरण

गांव जयमलसर में "एक घर–एक पौधा" अभियान के तहत 28 जुलाई को ग्रामीणों को एक हजार एक पौधे वितरित कर वृक्षारोपण अभियान की शुरूआत की गई। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसीबिलिटी के प्रभारी अधिकारी, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि करंज, शीशम, नीम, अरडू, बकेन सहित विभिन्न प्रजाति के पौधे वितरित कर ग्राम पंचायत भवन व गांव के श्मसान भूमि में पौधारोपण किया गया। इस अभियान में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. एस.सी. गोस्वामी और अनुसंधान निदेशक प्रो. हेमंत दाधीच ने पौधे वितरित किए। इस अवसर पर ग्राम पंचायत भवन में कोविड–19 जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सामाजिक दूरी बनाए रखकर कोरोना महामारी के लक्षण और बचाव के उपायों की जानकारी देकर गांव वासियों को सरकार की सलाह के मुताबिक सतर्क रहने का आह्वान किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 31 जुलाई को गोद लिए गांव जयमलसर के सार्वजनिक तालाब का पुर्नउद्धार कार्य प्रारंभ किया गया। राजुवास के कुलसचिव अजीत सिंह राजावत और प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने श्रमदान कर कार्य शुरू किया। श्रमदान में वेटरनरी विश्वविद्यालय और ग्राम पंचायत ने संयुक्त रूप से संसाधन लगाकर तालाब का पुर्नउद्धार किया। जेसीबी मशीन और ट्रेक्टर लगाकर पक्के तालाब में जमे मलबे को बाहर किया गया। तालाब के जलग्रहण क्षेत्र में भी साफ–सफाई करके वर्षा जल के आवक मार्ग को दुरूस्त कर दिया गया।

उष्ट्र एवं अश्व प्रजनन पर अर्न्तराष्ट्रीय वेबिनार सम्पन्न

भारतीय पशु प्रजनन अध्ययन सोसाइटी (इसार) एवं वेटरनरी विश्वविद्याल, बीकानेर द्वारा संयुक्त रूप से 12 जुलाई को ऊँट प्रजनन तथा 19 जुलाई को अश्व प्रजनन पर दो अन्तर्राष्ट्रीय बेबिनार का आयोजन किया गया। ऊँट प्रजनन वेबिनार के मुख्य अतिथि प्रो. ए.के. मिश्रा, अध्यक्ष कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल, नई दिल्ली ने कहा कि ऊँट मरूस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए उपयोगी पशु है अतः इसके उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। वेबिनार में चर्चा के दौरान कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि ऊँट राजस्थान का राज्य पशु है इसके उन्नयन एवं संरक्षण की महत्ती आवश्यकता है। वर्तमान में ऊँट की सामाजिक उपयोगिता को बढ़ाने में ऊँट के दूध का विशेष योगदान है अतः ऊँट के दूध को बाजार में लोकप्रिय बनाने एवं इसके विपणन हेतु औद्योगिक संस्थान एवं राज्य सरकार के साथ समन्वय स्थापित करने पर बल दिया। अश्व प्रजनन वेबिनार के मुख्य अतिथि प्रो. वी. चन्द्रशेखरमूर्ति, भारतीय पशु प्रजनन अध्ययन सोसाइटी के अध्यक्ष ने बताया कि अश्वों के उपयोग का अतीत भारतीय संस्कृति में लगभग 4000 वर्ष पुराना है, परन्तु अश्वों की घटती हुई संख्या एवं आर्थिक नुकसान को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर सार्थक कदम उठाने की आवश्यकता है। वेबिनार में चर्चा के दौरान कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि इस वेबिनार के माध्यम से विभिन्न अश्वपालकों एवं अश्व अनुसंधान, अश्व स्वास्थ्य एवं अन्य क्षेत्रों में कार्य कर रहे पशुचिकित्सकों को नवीनतम जानकारी उपलब्ध होगी। भारतीय पशु प्रजनन अध्ययन सोसाइटी के राजस्थान चैप्टर के अध्यक्ष प्रो. जी.एन. पुरोहित ने बताया कि इस अन्तर्राष्ट्रीय आनलाईन वेबिनार में 65 देशों के कुल 2270 प्रतिभागियो ने पंजीकृत किया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी., रतनगढ़ (चूरू)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 14 एवं 21 जुलाई को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 19 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 3, 8, 10, 13 एवं 17 जुलाई को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 126 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., लूनकरणसर (बीकानेर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 10, 14, 18 एवं 21 जुलाई को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 15 एवं 21 जुलाई को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 23 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया (नागौर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया – लाड़नू द्वारा 28, 29 एवं 30 जुलाई को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 46 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 10, 15 एवं 20 जुलाई को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 24 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., टोक

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 14, 18 एवं 21 जुलाई को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 48 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 20 जुलाई को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 10 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 13, 15, 18, 21 एवं 25 जुलाई को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 92 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी.,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 15 जुलाई को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 07 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 7, 9, 13, 16 22 एवं 23 जुलाई को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 91 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., झुंझुनूं

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 23, 26 एवं 30 जुलाई को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 43 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 3 जुलाई को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 15 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 21–22, 23 एवं 24 जुलाई को ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 73 किसानों ने भाग लिया।

वर्षाकाल में पशु स्वास्थ्य प्रबंधन

पशुपालक भाईयों, इस वर्ष पूरे राज्य में वर्षा का आगमन हो चुका है और मानसून का सामान्य होने की आशा है। इस समय हरे चारे की उपलब्धता हो चुकी है और गड्डे, पोखर, तालाब नदियों में पानी की अच्छी आवक हो रही है। वर्षाकाल चारे–पानी की उपलब्धता के साथ पशु स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ परेशानियां भी साथ लेकर आता है। इस समय सभी पशुओं में संक्रमित चारे–पानी से दस्त रोग की शिकायत बढ़ जाती है। भेड़–बकरियों में दस्त के अतिरिक्त फड़कियां रोग से काफी मृत्यु देखी जाती है। गौवंश व भैंसों में गलघोटू रोग भी इस मौसम में काफी देखा जाता है। ज्यादा हरे चारे से काफी पशुओं में आफरा होने की शिकायत रहती है। इस मौसम में सूखे चारे–तूड़ी इत्यादि में फफूंद भी पनप जाती है और ऐसे फफूंद युक्त चारा खाने से पशु को अपच, दस्त व कई बार गर्भपात भी होने से पशु के स्वास्थ्य पर विपरीत असर होता है और पशुपालक को भारी नुकशान होता है। बरसात में भीगने से पशु शिशुओं में न्यूमोनिया होना आम बात है। इसके अतिरिक्त पशु शरीर पर घाव होने की अवस्था में उनमें कीड़े पड़ने से पशु को बहुत तकलीफ होती है जिससे दुग्ध उत्पादन में काफी कमी हो सकती है। अतः वर्षाकाल में पशुपालकों को सावचेत रहकर निम्न प्रबंधन करना आवश्यक है:

1. पशु शिशुओं को न्यूमोनियां से बचाने के लिए बरसात में न भीगने दें।
2. चारे–पानी को गन्दे बरसाती पानी से सक्रंमित न होने दें।
3. यदि पशुओं में टीके नहीं लगाये गये हो तो गलघोटूं व फड़किया रोगों के टीके लगवा लें।
4. हरा चारा सूखे चारे के साथ मिला कर खिलायें ताकि आफरा जैसी समस्या से पशु को बचाया जा सके।
5. सूखे चारे को भीगने से बचाये ताकि उसमें फफूंद ना लगे।
6. यदि शरीर पर घाव में कीड़े पड़ गये हो तो घाव की सफाई कर तारपीन के तेल से घाव के कीड़े मारे तथा घाव पर मक्खियां ना बैठने देवें।
7. अन्य किसी परेशानी में तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर अपने पशुओं को स्वस्थ रखें।

–प्रो. ए. के. कटारिया

प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

बरसात में थनैला रोग पर काबू पाएं

बरसात के मौसम में पशुओं को कई तरह के रोग जहां पशु के स्वास्थ्य पर असर डालते है वहीं पशुपालक की आय को भी प्रभावित करते हैं अतः पशुधन का स्वस्थ रहना बहुत जरूरी है, इसलिए जरूरी है कि पशु को हम हर रोग से बचाएं। बरसात के मौसम के बाद पशुओं को कई तरह के रोग हो सकते हैं जिनके बचाव का टीका भी उपलब्ध है परन्तु फिर भी कुछ ऐसे रोग हैं, यदि पशुपालक थोड़ा सा भी ध्यान रखें तो इन रोगों से बचा जा सकता है। पशु में होने वाले रोगों में से थनैला रोग भी ऐसा रोग है जिसमें पशु की मृत्यु तो नहीं होती है, परन्तु इस रोग से सबसे अधिक नुकसान दुग्ध उत्पादन में कमी के रूप में मिलता है। यदि थनैला रोग एक बार पशु को हो जाए तो पशुपालक को काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

क्या है थनैला रोग

इस रोग में पशु के थन में सूजन आ जाती है, थन गर्म रहते है तथा कभी–कभी पशु के थन में दर्द भी रहता है। इस रोग से प्रभावित पशु का दूध कम हो जाता है। समय पर ईलाज न मिलने पर थन से खराब दूध निकलता है। दूध के साथ कभी–कभी खून भी निकलने लग जाता है। यदि थनैला रोग के लिए प्रारम्भ से ही उचित देखभाल न की जाये तो यह रोग थनों को खराब करके सुखा देती है। रोगयुक्त थन छोटा भी हो जाता है व दूध आना बंद हो जाता है। कभी कभी थनों से गंदा, बदबूदार, थक्के व खून युक्त दूध आने लगता है।

थनैला रोग कई प्रकार के जीवाणु, विषाणु व फफूंद आदि के कारण होता है। बारिश के मौसम में अधिक आर्द्रता व उचित तापमान के कारण वातावरण में जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होने के कारण इस रोग के होने की संभावना बढ़ जाती है, साथ ही बारिश के मौसम में गंदगी व कीचड़ होने व साफ–सफाई में कमी होने से भी इस रोग के बढ़ने की संभावना रहती है। सामान्यतः पशु के दूध दुहने के बाद थन की नली आधे घण्टे के लिए खुली रहती है। इस रोग को पैदा करने वाले जीवाणु वातावरण और थनों की सतह पर रहते हैं तथा इस मौसम में यह रोगाणु थन के अन्दर प्रवेश कर जाते हैं। गर्मी और बरसात में पशु शाला में गंदगी बढ़ जाने से भी थनैला रोग की संभावना बढ़ जाती है। गर्मी, आर्द्रता और मानसून के कारण पशुओं के थन की रोग–प्रतिरोधक क्षमता का कम होना भी इस रोग के होने की सम्भावना पैदा करता है। पशुपालकों द्वारा दूध दुहने की सही विधि ''पूर्णहस्त विधि'' का उपयोग में नहीं लेना भी इसका कारण बनता है। प्रायः पशुपालक पशु के थन पर अगूंठे के दबाव के साथ दूध दुहते हैं। इससे थन की नली में चोट लग जाती है जो थनैला रोग की सम्भावना को बढ़ाती है। अतः पशु का दूध पूरी मुठ्ठी से दुहना चाहिए।

कैसे पहचानें थनैला रोग

थनैला रोग दो प्रकार का होता है, आमतौर पर पशुपालक भाई थनैला रोग को उसके लक्षण से पहचानते हं, परन्तु पशुओं में बिना लक्षणों वाला सबक्लीनिकल थनैला रोग भी होता है।

बिना लक्षणों वाला सबक्लीनिकल थनैला रोगः– इस रोग में पशु का अयन सामान्य नजर आता है तथा पशु थनैला के कोई लक्षण नही दिखाता है परन्तु पशु का दूध निरन्तर घटता जाता है। दूध की जांच कराने पर ही इसका पता चल पाता है। पशुओं में सबक्लीनिकल थनैला 30–60 प्रतिशत तक पाया जाता है।

लक्षणों वाला क्लीनिकल थनैला रोगः– इस प्रकार के थनैला रोग में थनों में सूजन आ जाती है, थनों में दर्द रहता है व थन गर्म रहते हैं। दूध उत्पादन में कमी के साथ साथ दूध के रंग, स्वाद व गाढ़ेपन में अन्तर आ जाता है। दूध पतला, फटा हुआ, दूध में फिदकड़ी आना व नमकीन दूध इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं। थनैला रोग का प्रभाव दूध की गुणवत्ता पर भी पड़ता है। इस रोग से पशु के दूध में वसा, लेक्टोज व लवण विशेषकर पोटेशियम व कैल्शियम की कमी हो जाती है। दूध में सोडियम व क्लोराइड की मात्रा बढ़ जाने से दूध नमकीन हो जाता है। दूध से दही, पनीर ढंग से नहीं बन पाते हैं। दूध की भण्डारण क्षमता भी कम हो जाती है।

कैसे काबू करें थनैला रोग

थनैला रोग से बचाव के लिए पशुपालक को सजग रहना जरूरी है। सही मायने में देखा जाए तो थनैला रोग साफ–सफाई व पशु प्रबंधन से जुड़ा हुआ रोग है। बरसात में गंदगी ज्यादा होने से इस रोग के बढ़ने की संभावना रहती है। अतः इस मौसम में पशु प्रबंधन व साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें। पशु को दूध दुहने के बाद एक घण्टे तक बैठने नहीं दिया जाए, क्योंकि दूध दुहने के आधा घण्टे तक थन की नली खुली रहती है जिसमें जीवाणु प्रवेश कर जाते है। रोग की प्रारम्भिक अवस्था से ही पहचान जरूरी है ताकि इससे होने वाले आर्थिक नुकसान से बचा जा सके। बिना लक्षण वाले थनैला रोग की जांच एक आसान विधि केलिफोरनिया मेस्टाइटिस टेस्ट (सी.एम.टी.) द्वारा की जा सकती है। पशुपालकों को दूध की जांच नियमित रूप से हर दो सप्ताह में करानी चाहिये। इस रोग की जांच जितनी जल्दी हो जाए उतना ही अच्छा होता है तथा आर्थिक नुकसान से बचा जा सकता है। थनैला रोग उपचार के लिए पशुचिकित्सक की सलाह से एंटीबायोटिक दवाओं के साथ विटामिन ''ई'' व सेलेनियम के इन्जेक्शन का प्रयोग किया जा सकता है।

–डॉ. दीपिका धूड़िया, सहायक प्राध्यापक
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं में विषैले चारे के सेवन से उत्पन्न होने वाली विषाक्ततायें

हरा चारा पशु आहार का आवश्यक घटक है। स्टॉल फीडिंग में पशुपालक पशुओं को सावधानीपूर्वक चुनकर हरा चारा खिलाता हैं, परन्तु दुर्घटनावश कभी–कभार दुषित सड़े–गले या जहरीले पौधों का प्रयोग हो सकता है। कई बार पशु भी चारागाह में चरते वक्त गलती से जहरीले पौधे खा जाता है जिससे विषाक्तता उत्पन्न हो जाती है। चारा उगाने के बाद कभी–कभी बारिश नहीं होने से चारा मुरझा जाता है। इस मुरझाये हुए चारे को पशुओं को खिलाने से भी विषाक्तता उत्पन्न हो सकती है।

सामान्तया पशुओं में विषैले चारे के सेवन से विभिन्न प्रकार की विषाक्तता उत्पन्न हो सकती हैं।

साइनाइड विषाक्तता

साइनाइड विषाक्तता साइनोजेनिक पौधे खाने से होती है। साइनोजेनिक पौधे वे होते हैं जिनमें साइनोजेनिक ग्लाकोसाइड्स उपस्थित होते है। पशुओं द्वारा इनको खा लेने पर इनमें उपस्थित मुक्त हाइड्रोक्लोरिक अम्ल के कारण ये विषाक्तता उत्पन्न होती है। पौधों में उपस्थित बंधित हाइड्रोक्लोरिक अम्ल एंजाइम क्रिया के कारण मुक्त हाइड्रोक्लोरिक अम्ल में परिवर्तित हो जाता है। इन पौधों के कारण विषाक्तता सामान्तया खुले चरागाहों में चरने वाले पशुओं में अधिक होती है। मुख्य रूप से पाये जाने वाले साइनोजेनिक पौधें बबूल, ज्वार, कनेर, सफेदा, गन्ने की पतियां, मक्का, मूंग इत्यादि हैं। पशु के शरीर में हाइड्रोक्लोरिक अम्ल से पृथक होकर सायनाइड आयन, श्वांस के लिये एक महत्वपूर्ण एंजाइम साइटोक्रोम ऑक्सीडेज के आयरन आयन से क्रिया करता है, जिसकी वजह से पशु में ऑक्सीजन का उपयोग रूक जाता है, इसके फलस्वरूप उपचार नहीं होने से पशु की मौत हो जाती है।

लक्षण– सायनाइड युक्त चारा खाने से पशु बैचेन होने लगता है, मुंह से लार का गिरना बढ़ जाता है, श्वास लेने में कठिनाई होती है तथा पशु मुंह खोलकर श्वांस लेने लगता है। पशु के मुंह से कडवे बादाम की गंध आती है। सायनाइड़ विषाक्तता के कारण ऑक्सीजन शरीर में नहीं पहुंच पाती और श्वसन तंत्र के विफल होने से दम घुटने के कारण पशु की मृत्यु हो जाती है।

उपचार– सायनाइड विषाक्तता का पता लगते ही पशु को 3 ग्राम सोड़ियम नाइट्रेट एवं 15 ग्राम सोड़ियम थायोसल्फेट 200 मिली. डिसटिल पानी में घोलकर नस में लगाना चाहिये। पशु को पानी नहीं पिलाना चाहिए। पशु को एक्टिवेटेड चारकोल का घोल पिलाना चाहिए।

बचाव– छोटे पीले पतियों वाले, सूखे ऐंठे हुए, मुरझाये हुए पौंधो को चारे के रूप में नहीं खिलाना चाहिए। कम बढ़वार वाली ज्वार, बाजरा की जरी नहीं खिलानी चाहिए। अच्छी सिंचाई या बारिश के बाद ही बड़ी फसल पशु को खिलानी अच्छी रहती है। वर्षा काल से पहले अत्यधिक तेजी से बढ़ने वाले शुरूआती पौंधे नहीं खिलाने चाहिए।

नाइट्रेट विषाक्तता

अधिक नाइट्रेट वाले चारे को खिलाने से पशुओं में नाइट्रेट विषाक्तता की संभावना बढ़ जाती है। प्रायः चारे में नाइट्रेट की उच्च मात्रा नहीं पायी जाती परन्तु अगर फसल में नाइट्रेट युक्त उर्वरक एवं शाकनाशी का अधिक मात्रा में उपयोग किया जाये तो चारा फसलों जैसे मक्का, जई, चरी, सोयाबीन, सूडान घास इत्यादि में नाइट्रेट की मात्रा अधिक बढ़ जाती है। इन पौधों के अधिक सेवन से नाइट्रेट, नाइट्राइट में बदल जाता है और रक्त में हीमोग्लोबिन को मेट–हीमोग्लोबिन में बदल देता है। रक्त में मेट–हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ने के कारण कोशिकाओं तक ऑक्सीजन की पर्याप्त आपूर्ति नहीं हो पाती है, जिसके कारण कोशिकाओं में ऑक्सीजन का अभाव हो जाता है।

लक्षण– प्रारम्भ में पशु की श्वसन दर और नाड़ी दर बढ़ जाती है। श्वास लेने में कठिनाई और मांसपेशियों में ऐंठन आ जाती है एवं पेट दर्द के साथ दस्त भी देखने को मिलते है। ऑक्सीजन की कमी से आंख, नाक व मुंह की श्लेष्मा झिल्ली का रंग गहरा हो जाता है। अधिक विषाक्तता हो जाने पर रक्त का रंग चोकलेटी भूरा हो जाता है तथा रक्त का प्रवाह कम हो जाने से पशु की मृत्यु हो जाती है।

उपचार– विषाक्तता का पता चलते ही मिथाइलिन ब्लू का 1 प्रतिशत घोल लगभग 80 से 100 मिली. सीधा नस में चढ़ा देना चाहिए। इसके साथ ही एस्कोर्बिक अम्ल 3 मिली. प्रति किलोग्राम शरीर भार के अनुसार देना चाहिए। पशु को अच्छी मात्रा में पानी पिलाना चाहिए।

बचाव– अधिक नाइट्रोजन युक्त भूमि में उगे चारे की अधिक मात्रा को एक साथ उपयोग में नहीं लेना चाहिए। उनको अन्य चारे के साथ मिलाकर खिलाना चाहिए, छोटे एवं कम वृद्धि वाले सूखे एवं पीली पतियों वाले तथा मुरझाये चारे को कभी नहीं देना चाहिये। भूमि में अत्यधिक नाइट्रेट युक्त उर्वरकों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

कीटनाशकों के उपयोग से विषाक्तता

कीटनाशी को चारा उत्पादन बढ़ाने एवं खरपतवार को नष्ट करने हेतु उपयोग में लिया जाता है। कभी–कभी दुर्घटनावश कीटनाशी खा लेने से तीव्र विषाक्तता के कारण मृत्यु भी हो जाती है। कीटनाशी रसायनों में मुख्यतया ऑर्गेनोफॉस्फेट, ओर्गनोक्लोरीन, कारबामेट, एवं पायरेथरॉएड्स इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। ये पशुओं के तंत्रिका तंत्र और एंजाइम तंत्र एसिटाइल कॉलिन एवं न्यूरोट्रांस्मीटर को प्रभावित करते है एवं इनमें विषाक्तता उत्पन्न करते है।

लक्षण– मुंह से लार का स्त्रवण बढ़ जाता है। पशु अत्यधिक बैचेन हो जाता है। श्वसन दर, नाड़ी दर एवं तापक्रम बढ़ जाता है। श्वांस लेने में कठिनाई होने पर पशु मुंह खोलकर श्वांस लेता है, पशु लड़खड़ाकर चलता है। कई बार पक्षाघात भी हो जाता है।

उपचार– उपचार इस बात पर निर्भर करता है कि किस कीटनाशी का प्रयोग किया गया है। सार्वभौमिक एंटीडोट, एट्रोपिन सल्फेट का इंजेक्शन सीधे ही नस में लगाना चाहिए एवं लक्षणों के अनुसार इलाज करवाना चाहिए।

बचाव– पशु चारागाहों के आस–पास कीटनाशियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जहां ताजा कीटनाशियों का प्रयोग हुआ हो वहां पशुओं को खुला नहीं छोड़ना चाहिए। जिन खेतों में कीटनाशी का उपयोग हुआ है कुछ दिनों तक वहां से पशु को चारा उपलब्ध नहीं कराना चाहिए।

–डॉ. देवेन्द्र सिंह, डॉ. अभिषेक चौधरी और डॉ. महेन्द्र सिहं मील
वेटरनरी कॉलेज, नवानिया, वल्लभनगर, उदयपुर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अगस्त, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी	बांसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, सवाईमाधोपुर, अलवर, बूंदी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, बीकानेर, राजसमन्द, जैसलमेर, जोधपुर
बोवाइन इफिमिरल ज्वर (तीन दिन का बुखार)	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर, जालोर, जयपुर, अलवर, सीकर
पी.पी.आर	बकरी भेड़	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, बीकानेर, चूरू, पाली, सिरोही, सीकर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	भैंस, गौवंश, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, अलवर, टोंक
गलघोंटू	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चित्तौड़गढ़, अलवर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, झुंझुनूं
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, जोधपुर
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बांसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, नागौर, धौलपुर, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, पाली, सिरोही
सर्रा	ऊँट, भैंस, गौवंश	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बूंदी, सीकर, श्रीगंगानगर, भरतपुर
रक्त परजीवी (थाइलेरिओसिस, बेसिओसिस)	भैंस, गौवंश	बांसवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, सीकर, भरतपुर
अन्तःपरजीवी (कृमि)	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बूंदी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर, अलवर
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनू, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, जयपुर, अलवर, बीकानेर, सीकर, हनुमानगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

पशुपालन ने बनाया डेयरी का मालिक

भगवानपुरा – मालपुरा, टोंक निवासी ईश्वरलाल जाट एक लघु सीमान्त किसान है जिन्होनें कम जमीन होने के कारणपशुपालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया। ईश्वरलाल शुरू से ही खेती तथा पशुपालन पर ही आश्रित थे, लेकिन पिछले चार सालों से पशुपालन पर ही अपना पूरा ध्यान केन्द्रित किया तथा सार्थक तरीके से अपनाया। पहले इनके घर में केवल आवश्यकता के अनुसार ही पशुपालन था परन्तु समय के साथ–साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया। ईश्वर लाल जाट के पास केवल 20 बीघा जमीन है, परन्तु ईश्वर लाल का कहना है कि जितनी बचत उन्हें पशुपालन से हो रही है उतनी कृषि से नहीं होती। वर्तमान में ईश्वर लाल के पास 15 भैसें, 10 बछिया एवं बछड़े तथा 10 गायें है। गाय–भैंस का दूध बेचकर तथा गोबर विक्रय कर आय अर्जित करते हैं। ईश्वर लाल उन्नत तकनीकों को अपना रहें हैं। समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अविकानगर (टोंक) द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते हैं तथा व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु सम्पर्क में रहते है। प्रशिक्षण प्राप्त करने से ईश्वर लाल को काफी लाभ हुआ है। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, दुग्ध उत्पादन में वृद्वि, सन्तुलित पशु आहार आदि की जानकारी प्राप्त करते है। वे पशुपालन की नवीनतम व उन्नत तकनीकों की जानकारी अन्य पशुपालकों को भी अवगत कराते है। वर्तमान में पशुओं व पशु शाला की देखरेख के लिए ईश्वर लाल ने गांव के एक अन्य व्यक्ति को भी रोजगार उपलब्ध करवा रखा है। ईश्वर लाल प्रतिदिन गाय–भैंस से एक क्विंटल दूध का उत्पादन करते है। इनकी दो भैंसों से की गई शुरूआत आज एक बड़ी डेयरी के रूप में विकसित हो गई है। ईश्वर लाल अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र अविकानगर को देते है। **सम्पर्क- ईश्वरलाल जाट, मालपुरा, टोंक (मो. नं. 9929584028)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

हरे चारे को भविष्य के लिए परिरक्षित करें

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों बहनों।

मानसून आगमन के साथ ही पशुओं के लिए हरा चारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। पशुओं को वर्ष भर हरा चारा उपलब्ध करवाना कठिन होता है। इस समय अच्छे किस्म का हरा चारा आवश्यकता से अधिक मात्रा में उपलब्ध है अतः इसको परिरक्षित करना जरूरी होता है जिससे चारे की कमी के मौसम में इस परिरक्षित चारे को पशुओं को खिलाया जा सके और उनकी उत्पादन क्षमता में कोई कमी न आये। चारे का परिरक्षण दो प्रकार से किया जाता है :– हरे चारे को काटकर हरी अवस्था में रखना इस विधि को साइलेज बनाना कहते हैं। हवा रहित स्थान में किण्वन द्वारा परिरक्षित चारे को साइलेज कहते हैं। यह 25 से 35 प्रतिशत के बीच शुष्क पदार्थ की अवस्था में बनाया जाता है। इसे खत्तियों में बनाया जा सकता है। खत्तों की कई किस्में है टावर साइलो, ट्रेन्च साइलो, बंकर गोलाकर, आयताकार व वर्गाकार होते हैं। साइलेज बनाने के लिए कई प्रकार के साइलो उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है। ये साइलों कच्चे, पक्के अथवा प्लास्टिक के भी तैयार किये जा सकते हैं। करीब 6 से 7 क्विंटल साइलेज के लिए एक वर्ग मीटर स्थान चाहिए। एक अन्य विधि में हरे चारे को काटकर सूखाकर परिरक्षित करने की विधि को 'हे' बनाना कहते हैं। इसमें किसी फसल को अच्छी तरह पकने से पहले जब शुष्क पदार्थ की मात्रा 60 प्रतिशत के लगभग हो, काट लिया जाता है और संग्रह के लिए सुखा लिया जाता है। कोई भी घास या दलहनी चारा जो कि पशु को खिलाया जा सकता है, उसे 'हे' में बदला जा सकता है। हे बनाने के लिए फसलों को सुखाने की अनकों विधियां हैं। सुखाये गए चारे में नमी की मात्रा 15–20 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। चारे को परिरक्षित करने के लिए किसान पशुपालक भाई राजुवास टोल फ्री हैल्पलाइन अथवा वेटरनरी कॉलेज में सम्पर्क कर अधिक जानकारी ले सकते हैं। भविष्य की जरूरत को पूरा करने के लिए चारे को परिरक्षित करने का यह एक उपयुक्त अवसर है।

–प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

मुस्कान !

''धीणे री बात्यां''

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित रेडियो कार्यक्रम

विषय	वार्ताकार	दिनांक व समय
वैज्ञानिक तरीके से भेड़ पालन में अधिक आमदनी पायें।	डॉ. एच.के. नरूला प्रधान वैज्ञानिक केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान संस्थान, बीकानेर	गुरुवार 20 अगस्त, 2020 सायं 5.30 से 6.00 बजे

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224